बर्लिन की शांति-धड़ी के समय की कहानी

इसका नाप तीन मीटर है और दो टन भारी है, एक प्राचीन सेंट बेनेडिक्ट धड़ी, जिसके खुले गोल स्तम्भ एक प्राचीन मुख्य द्वार की ओर स्वागत करते हुए दिखते हैं, जिसका स्वर संगीत का अनुभव देता है, जिसके तिरछे धरनी पर "समय सब दिवारें तोड़ देता है" अभिलेख गड़ा है।

यह एक मूल बर्लिन शांति-धड़ी है, जिसकी १९८९ में जौहरी लोरेन्स ने रुपरेखा करी, बनाई और सार्वजनिक प्रदर्शन किया, जिसका आज भी लोरेन्स की दुकान में अनुभव किया जा सकता है।

इसका आरम्भ एक गुरूवार को हुआ था, बृहस्पति के दिन, एक शुभ दिन पर।

दुकान के ११५वें जन्मदिवस के अवसर पर, जो बर्लिन की धड़ी व गहनों की पहली दुकानों में से एक है, इस धड़ी को कला-वस्तु के विचार से बनाया गया था। काफी समय से तैयारी करने के बाद २५० से अधिक मुख्य अतिथि इस लोरेन्स-उत्सव पर बर्लिन-फ्रीडेनाउ आए - उनका शैम्पेन से स्वागत किया गया, प्रवेश-द्वार पर पियानो के ललित स्वर प्रस्तुत किये गये, शाम को सात बजे जौहरी लोरेन्स बोलना प्रारम्भ करते हैं और साथ-साथ उस भारी कला-धड़ी-वस्तु से कपड़ा हटाकर उसे प्रकट करते हैं। हम "पश्चिम"-बर्लिन शहर के उस हिस्से में हैं, जिसकी ९ नवम्बर १८७४ को शांति-क्षेत्र के नाम से स्थापना होती है - उसी वर्ष में, जब जौहरी लोरेन्स की दुकान की स्थापना होती है। हम फ्रीडेनाउ में हैं, जिसका नगर-चिन्ह एक शांति-देवदूत है। यह ९ नवम्बर १९८९ की शाम है।

तब तक कोई नहीं जानता था कि उसी शाम को उसी समय थोड़ी दूर, दिवार के उस पार "पूर्वी"-बर्लिन में क्या होने वाला हैः पूर्वी यूरोप की संकट अशंका - १९५३ व १९६१ में भी स्थिति इतनी गंभीर नहीं थी - पूर्वी जर्मनी का दिवालिया, जनता का प्रतिवाद, जनता का देश से भाग जाना, मास्को, प्राग व बूडापेस्ट के राजनीतिक दबाव, ये सब बातें "पूर्वी"-बर्लिन की शासन पार्टी एस॰ई॰डी॰ को मानवता के प्रथम कदम उठाने पर मजबूर कर देती हैंः शाम के लगभग ७ बजे - असल में ठीक ६.५७ पर - शासन पार्टी के सदस्य शाबावस्की ने जल्द में बुलाई हुई पत्रकार- सम्मेलन के प्रश्न का, कि विदेश-यात्रा के नए नियम कब लागू होंगे, का सक्षिप्त उत्तर दियाः "जहाँ तक मुझे जानकारी है, अभी इसी क्षण से"। तब तक कोई नहीं जानता था कि यह विश्व के इतिहास का शायद सबसे शांतिपूर्ण काल की ओर प्रस्थान का आरम्भ था।
और ऐसा ही होता हैः शाम के ७.२० पर ही स्प्रिंगर प्रकाशन-संस्था को पता चल जाता है कि "सीमा खुल गई है"। उसी ९ नवम्बर १९८९ की शाम को बर्लिन की दिवार गिर जाती है और नए काल के मार्ग खुल जाते हैं - शीतयुद्ध का अंत व बंटवारे पर विजय बिना किसी हिंसा के हो जाती है। सबको इस बात का अहसास होता है कि भविष्य के द्वार खुल गए हैं। शीध्र ही लोग पूर्व से पश्चिम और पश्चिम से पूर्व पहुँच कर खुशी से नाचते हैं। रात के ११ बजे

बार्नहोल्मर स्ट्रासे की सीमा जाँच चौकी पर अंतिम आदेश दिया जाता हैः “सभी जाँच नियंत्रण समाप्त किए जाते हैं। हम सब सड़कें खोल रहे हैं।” – यह जर्मनी की पहली सबसे सुन्दर क्रांति है। यह स्वतंत्रता का सौभाग्यपूर्ण क्षण है और अहिंसा का भी। एक भाग्यशाली क्षण विश्व के लिए, यूरोप के लिए, जर्मनी के लिएः शांति के सबसे शुभ क्षण।

कुछ देर बाद समाचारपत्र बी॰ ज़े॰ का ९ नवम्बर १९८९ का शीर्षक “जब उस राक्षस पर विजय हुई” होता है – और किसी को भी ठीक ढंग से नहीं पता कि वह राक्षस वह जर्मनी भी है, जिसने कभी दो भयानक विश्वयुद्ध किए, केवल युद्ध को ठीक माना और उसके नतीजे में यह खूनी दिवार निकली। यह बर्लिन की दिवार कोई मामूली दिवार नहीं थीः वह उस विश्व की बिमारी का चिन्ह था, जिसे शीतयुद्ध कहा जाता था; ९ नवम्बर १९८९ तक सब इस बात को पक्का मानते थे कि यह दिवार तीसरे विश्वयुद्ध के बाद ही गिरेगी। क्या होता यदि जर्मनी के किसी युद्धापराध के विचारों वाला गोली चलाने का आदेश दे डालता?

१९९२ में बर्लिन के नए मानसेवी नागरिकों – कोहल, रेगन व गोर्बाछॉव – को शांति धड़ी प्रदान करते हुए।

परन्तु उस राक्षस पर विजय हुईः ९ नवम्बर १९८९ को उस नए जर्मनी की एक ही लोकमत थी कि विश्व संकट की अशंका में युद्ध व हिंसा का प्रयोग करना गलत रहेगा और शांति व स्वतंत्रता के लिए साहस जुटाना पड़ेगाः आज और यहाँ – बर्लिन के मध्य में – एक नया काल शुरु हुआ और वह भी ऐसे स्वाभाविक रुप में, जैसे धड़ी चलाने के लिए निदोल को धक्का दिया जाता है।

चलो, “पश्चिम”–बर्लिन वापस चलते हैं, जौहरी लोरेन्स के ११५वें जन्मदिवस के अवसर पर, शांति–क्षेत्र में, जहाँ किसी को भी आने वाले परिवर्त्तन–काल का कोई ज्ञान नहीं था – या किसी को था? शाम के सात बजे से कुछ पहले – “पूर्वी”–बर्लिन में शाबावस्की के पत्रकार–सम्मेलन वाले समय पर – जौहरी लोरेन्स शाम की आश्चर्य–वस्तु से कपड़ा हटाते हुए कहते हैंः “भाइयो और बहनो – इस कला–धड़ी–वस्तु की हमने कई बार रुप–रेखा बनाई और कई बार रद्द करने के बाद आज हम आपके सामने प्रस्तुत करना चाहते हैं। इसका आशापूर्ण संदेश “समय सब दिवारें तोड़ देता है” है।” इसके बाद निदोल को धक्का दिया जाता है – और शाम के ठीक ६.५७ पर वह भारी धड़ी चलनी शुरु हो जाती है।

कमरा उसके भारी स्वर से भर जाता है। उसके बाद धड़ी के, उसके अभिलेख और रुप के बारे में चर्चा होती हैः जैसे कि क्या यह कला–धड़ी–वस्तु एक द्वार जैसे तो नहीं दिख रही जो कि एक नए काल का स्वागत कर रही हो?

तब एक अजीब बात होती हैः झटाझट सभी अतिथियों को सूचना मिल जाती है कि अभी–अभी बर्लिन की दिवार खुल गई है। एक टेलिविज़न को लाया जाता है और सचमुचः

खुली दिवार के पहले चित्र दिखाए जाते हैं! और यहाँ नई धड़ी शुभ वचन कह रही होती है “समय सब दिवारें तोड़ देता है”।

तब के शासनीय नगरपति एबरहार्ड डीपगेन मिशाएल गोर्बाछॉव को शांति-धड़ी प्रदान करते हुए।

लोग आसूँओं से भरी आँखों से उस धड़ी को अजरज नज़रों से देख रहे होते हैं, उस सेंट बेनेडिक्ट धड़ी की टिकटिक को सुन रहे होते हैं - और अजरज से उसी समय दिखाई जा रही नामुमकिन शांतिपूर्ण दिवार के खुलने के समाचारों को देख रहे होते हैं। आखिर अतिथियों में से एक कह उठता हैः “अरे, यह तो एक शांति धड़ी है, बर्लिन की एक असली शांति धड़ी!”

इस प्रकार से बर्लिन की शांति धड़ी का जन्म बर्लिन की दिवार के मरण के समय हुआ - शांति धड़ी के वचनों की योग्यता का इससे उत्तम प्रमाण क्या हो सकता हैः “समय सब दिवारें तोड़ देता है”? जैसे समय आगे बढ़ता है, वैसे ही यह बर्लिन की दिवार के खुलने की समय-साक्षी धड़ी भी नहीं ठहरतीः जल्द ही जौहरी लोरेन्स लगभग ३० से॰मी॰ बड़ी, बहुमूल्य प्रतिकृति बनानी शुरु कर देते हैं।

सून १९९२ में ऐसी पहली तीन धड़ियाँ गोर्बाछॉव, रेगन व कोहल - १९९९ में एक और शांति धड़ी अमरीका के भूतपूर्व राष्ट्रपति जार्ज बुश को प्रदान करी गईः क्योंकि यहाँ पूर्व-पश्चिम का पारस्परिक प्रभाव भी रहा है, जिसने बर्लिन की दिवार को विश्व की राजनीति की दुर्धटना नहीं बनने दिया, बल्कि उसे आदर्शस्वरुप शांति की धटना बना दिया। क्या शीतयुद्व को शांतिपूर्णता से समाप्त करने वाली उस समय की महाशक्तियों की राजनीति, आजकल की जार्ज वी॰ बुश के अधीन अमरीका की सरकार की राजनीति के मुकाबले में बहुपक्षीय प्रतिवस्तु रही है ?

१९९३ में मदर टेरेसा कलकत्ता में बर्लिन के काल-चिन्ह को ग्रहण करते हुए।

१९९६ में पोप योहानेस पाउल को एक शांति धड़ी प्रदान करी गईः इसे संकेत के रुप में दी गई कि शांति केवल राजनीति का मामला नहीं है, बल्कि धर्मों का भी है, क्योंकि दूसरे धर्मों व धर्म पालन करने वालों को सम्मान दिए बिना हमेशा अशांति बनी रहेगी। और फिर १९९३ में भारत में मदर टेरेसा को शांति धड़ी प्रदान करने का संकेत केवल उत्तर-दक्षिण संधर्ष ही नहीं थाः मदर टरेसा की मिश्नेरीज़ ऑफ चैरिटी जर्मनी में भी काम करती हैं। सहजीवी मनुष्यों के प्रति प्रेम की भावना - यह हर रोज़ का मामूली शांति-कर्म होता है, जो कि अपने सहजीवी मनुष्य से ही आरंभ होता है - जो कि किसी को अलग करने की दिवारों को नहीं जानता।

इस पहले संकल्प-शक्ति द्वारा, सून २००० तक सात शांति धड़ियाँ प्रत्याशा के काल-चिन्ह के रुप में बर्लिन-फ्रीडेनाउ से विश्व के कोने-कोने में गयींः रुस, रोम, अमरीका, बॉन, भारत - इन सब जगह तक। विश्व-राजनीति के प्रतिनिधियों की ओर, विश्व-धर्मों की ओर - इसे ऐसा भी कहा जा सकता हैः विश्व-नीतिशास्त्र की ओर। हर शांति धड़ी, जो ९ नवम्बर १९८९ की साक्षी रही है, एक बेहतर विश्व की बर्लिन की दूत रही है, एक आने वाले काल की आशाओं की

वाहक रही हैः एक ऐसा काल, जहाँ दुष्टता और ईर्ष्या की दिवारें, दिमाग व दिल की दिवारें, क्रूरता व धृणा की दिवारें ठहर नहीं पाएँगी। बर्लिन की शांति धड़ी का अभिलेख भी यही कहता हैः "समय सब दिवारें तोड़ देता है"।

१९९४ में रीटा स्यूसमूठ की उपस्थिति में जर्मन संसद सभा को शांति-धड़ी प्रदान करते हुए।

सून २००२ में बर्लिन-शांति-धड़ी का यह सामयिक-किस्सा अधिकारिक बन जाता हैः उस वर्ष में बर्लिन की यूनेस्को-कमेटी ने जौहरी लोरेन्स के साथ और बर्लिन के विज्ञान व संस्कृति के अधिसभ्य के सहयोग द्वारा "बर्लिन का शांति-धड़ी पुरुस्कार" का स्थापन किया। प्रसिद्ध प्रतिभूत भी इस पुरुस्कार का समर्थन करते हैं और तब से हर वर्ष ९ नवम्बर को बर्लिन में प्रदान किया जाता है। तब से भविष्य के पुरुस्कार-विजेताओं को महत्वपूर्ण व्यक्तियों से बनी निरीक्षक संस्था द्वारा चुना जाता है। "बर्लिन का शांति-धड़ी पुरुस्कार" विश्व के उन व्यक्तियों या संस्थाओं को दिया जाएगा, जो अपने कर्मों या प्रभाव द्वारा जातियों, समाज, जनता, राष्ट्रों, संस्कृतियों, धर्मों, सिद्धान्तों, दलों और मानवों के बीच खड़ी दिवारों पर विजय पाते हैं।

९ नवम्बर २००३ बर्लिन की यूनेस्को-कमेटी ने पहली बार "बर्लिन का शांति-धड़ी पुरुस्कार" प्रदान किया - सिनेट-कार्यालय ने अपनी अधिकारिक धोषणा में कहाः (आज) बर्लिन के शासनीय नगरपति क्लाउस वोवेराइट ने जर्मनी के भूतपूर्व इज़राएली राजदूत आवी प्रिमोर को फ्रीडेनवरडर-चर्च में "बर्लिन का शांति-धड़ी पुरुस्कार" प्रदान किया। प्रिमोर को यह सम्मान इज़राएल व पालेस्तीन के बीच के विपरीतता पर विजय पाने व उनके शांति लाने के परिश्रम के लिए दिया गया (...)।

जून १९९६ में पोप जॉन पाऊल बर्लिन में बर्लिन के कार्डिनल स्टेरसिन्सकी से एक और शांति-धड़ी प्राप्त करते हुए।

बर्लिन के शासनीय नगरपति अभिनंदन-भाषण में यह भी कहते हैं कि "९ नवम्बर जर्मनी के लिए वर्ष का सबसे कठिन दिन होता है। (...) यह दिन सर्वोच्च खुशी व सर्वोच्च शोक का दिन होता है, व साथ-साथ अतयन्त लज्जा का भी है। (...) कि यह शांति-धड़ी भी इस दिन की सम्पति-सूची में शामिल है, इस बात को साबित करता है कि वह ९ नवम्बर के आसपास बहुत सारी मौजूद अन्तर्विरोधपूर्णताओं में से एक है। वह उसी शाम को पहली बार प्रस्तुत की गई, जिस शाम को दिवार भी खुली। इस कारण से यह शांति-धड़ी उसके जन्मदिन पर एक महत्वपूर्ण व्यक्ति को प्रदान करी जाती है। मुझे यह चयन पसन्द है, और फिर इससे अच्छा स्थान व समय और कुछ हो ही नहीं सकता। चूँकि आवी प्रिमोर ने बर्लिन और शांति के लिए विशिष्ट सराहनीय कर्म किए हैं, खास तौर पर जर्मनी व इज़राएल के बीच मित्रता स्थापन करने में सफल रहे हैं।"

आवी प्रिमोर ९ नवम्बर २००३ की धोषणा में कहते हैंः "यह बर्लिन की शांति-धड़ी इज़राएल में मेरे मित्रों को प्रेरणा देगी। हमें हमारी जनता को यह विश्वास दिलाना होगा कि सबको शंका की दिवारों को तोड़ने के लिए समय लगाना ही पड़ेगा। "

"बर्लिन का शांति-धड़ी पुरुस्कार" की शुरुआत और संस्था स्थापन करने के बाद से बर्लिन की यूनेस्को-कमेटी अपने को अतंर्राष्ट्रीय वचनबद्ध करती है कि ९ नवम्बर २००३ का असली अर्थ यह हैः कि १९८९ में बर्लिन की दिवार का खुलना जर्मनी के शाम के टेलिविज़न का कोई मामूली प्रोग्राम नहीं था, बल्कि नए जीवन की ओर प्रस्थान था। यह प्रस्थान नए काल की शुरुआत थी, यह खुशी व आशाओं की किरणों से इतना भरपूर है, कि इसकी भरपूरता सभी मनुष्यों में बाँटी जा सकती है।

अमरीका के भूतपूर्व राष्ट्रपति जार्ज बुश १९९९ में बर्लिन की शांति-धड़ी प्राप्त करते हुए।

यह उस क्षण की कृपा रही कि आशाओं के संदेशवाहक बनने का भाग्य बर्लिन की शांति-धड़ी को मिला - यह बिना दिवारों का काल-चिन्ह उसी समय उत्पन्न हुआ जब बर्लिन की दिवारें गिरीं।

आओ, हम इस आशाओं के काल-चिन्ह को उन लोगों तक पहुँचाएँ, जो छोटे या बड़े पैमाने में, उसी तरह दिवारों पर विजय पाएँ और विश्व के उन मार्गों की ओर कदम बढ़ाएँ, जहाँ सब लोग एक-दूसरे के साथ शांतिपूर्ण रह सकें। और हम "थके-माँदों को, गरीबों को, झुकी जनता को, जो स्वतन्त्रता के लिए तरसती है" को कहेंः जब वह बर्लिन की दिवार - जो विश्व के शीतयुद्ध की भयाकुल सीमेंट से जमी पक्की दिवार - शांतिपूर्वक गिर गई, समय के साथ-साथ दूसरी दिवारें भी अपने-आप गिर जाएँगी।

इज़राएल के भूतपूर्व राजदूत आवी प्रिमोर २००३ में शांति-धड़ी प्राप्त करते हुए (बर्लिन की यूनेस्को-कमेटी)।

यदि यह २१वीं शताब्दी एक शांति, स्वतन्त्रता व अहिंसा की शताब्दी बनेगी, तब उसका जन्म उस बृहस्पतिवार, ९ नवम्बर १९८९ शाम के १८.५७ पर हुआ - जब दिवार का मरण हुआ और बर्लिन की शांति धड़ी का काल आरम्भ हुआ।

आप असली धड़ी को देख सकते हैंः
जौहरी लोरेन्स, राइनस्ट्रासे ५९, १२१५९ बर्लिन-फ्रीडेनाउ
टेलिफोन नः ८५१ २० २०
खुलने के समयः सोमवार से शुक्रवार १० - १८ बजे तक